SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.05

# भारतीय ज्ञान परम्परा के मूलाधार: हमारे परम्परागत तथा आंचलिक खेलों में नैतिक आचरण

## डॉ. बृजेश कुमार यादव

एसोसिएट प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग नागरिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंघई, जौनपुर उ. प्र.

**सारांश:**

*भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिकता एवं चरित्र निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान है, जो परम्परागत एवं आंचलिक खेल प्रणालियों के माध्यम से प्रकट होता है। ये खेल केवल शारीरिक कौशल नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, सामाजिक आदर्श और सदाचार की शिक्षा भी देते हैं। खेलों में नैतिक आचरण समुदाय के स्थायित्व और एकता का प्रतीक है। निष्पक्षता, सम्मान, सहिष्णुता, टीम भावना और नेतृत्व जैसे गुण इन खेलों का हिस्सा हैं। खेल नियमों का पालन और खेल भावना का सम्मान व्यक्तित्व और सामाजिक समरसता का आधार बनाते हैं। कुश्ती, कबड्डी आदि प्रेरणादायक उदाहरण नैतिक शिक्षा का माध्यम रहे हैं। कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेना और धैर्य प्रदर्शित करना इन संस्कृतियों में प्राचीन काल से विकसित होता आया है। वर्तमान में, शिक्षा प्रणाली और राष्ट्रीय खेल नीति इन मूल्यों को बढ़ावा दे रही हैं। इन खेलों का अध्ययन और पाठ्यक्रम में समावेश युवा पीढ़ी में नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी जाग्रत करता है। भारतीय खेल परंपरा की नैतिक दिशा हमें सामाजिक सद्भाव और आत्मिक उत्कर्ष के मार्ग पर कार्य करना सिखाती है, जो मानवता के नैतिक मूल्यांकन का आधार बनती है।*

**मुख्य शब्द:** भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिकता, नैतिक मूल्य, सामाजिक आदर्श, खेल भावना।

## 1. प्रस्तावना

प्रस्तावना का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा एवं उसके मूल तत्वों को समझना है, जिनमें नैतिक आचरण सामाजिक जीवन का अविभाज्य तथा अनिवार्य हिस्सा माना गया है। भारतीय संस्कृति में खेलों को केवल शारीरिक क्रियाकलाप ही नहीं, बल्कि जीवन के नैतिक और सामाजिक मूल्यों का संवाहक माना गया है। परम्परागत खेलों में समाज के आदर्श तथा नैतिक मान्यताओं का संवर्धन किया जाता रहा है, जो सामाजिक संरचना एवं व्यक्तित्व विकास का आधार बनते हैं। इन खेलों की स्थापना से व्यक्तियों में प्रतिष्ठा, अंतर्मुखता, सहयोग, ईमानदारी, और निष्पक्षता जैसे गुणों का विकास होता है। भारतीय संस्कृति में नैतिक आचरण का अध्ययन केवल दर्शन या धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दैनिक जीवन के खेलकूद एवं सामाजिक क्रियाकलापों में निहित है। परंपरागत खेलों में वर्णित नियम और मानदंड सामाजिक मूल्यांकन का आधार बनते हैं, जो व्यक्तियों को नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में प्रेरित करते हैं। इस संदर्भ में, प्रत्येक खेल अनोखे रूप से नैतिक शिक्षा का माध्यम है, जो सामाजिक सद्भाव और

समानता का प्रतीक है। अतः, हमारे सांस्कृतिक परंपराओं में खेलों का सार्थक स्थान है, जो न केवल स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करते हैं बल्कि नैतिक आचरण का भी निरंतर प्रवाह बनाए रखते हैं और समाज में सद्भाव एवं समरसता का स्तंभ हैं।

**2. भारतीय ज्ञान परम्परा का अवलोकन**

भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्यों का आधार संस्कृति, तत्त्वमीमांसा और सामाजिक व्यवहार से गढ़ा गया है। इस परम्परा में वाङ्मय तथा तत्त्वज्ञाने अपरिहार्य स्थान रखते हैं, जो मनुष्य के स्वभाव, कर्तव्य और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को उद्घाटित करते हैं। यहाँ के दर्शन और साहित्यिक ग्रंथ मानव जीवन की ऊँचाइयों का मार्गदर्शन करते हैं, जिसमें नैतिक आचरण को जीवन का आधार माना गया है। भारतीय विचारधारा में नैतिकता का समावेश न केवल व्यक्तिगत सुधार के लिए बल्कि सामाजिक स्थायित्व के लिए भी आवश्यक है। इस परिप्रेक्ष्य में, खेलकूद को भी जीवन की शिक्षाप्रद प्रक्रिया समझा गया है, जिसमें नैतिक मूल्य, अनुशासन, सम्मान और निष्पक्षता का समावेश है। पारंपरिक खेलों में न सिर्फ शारीरिक दक्षता का मोक्ष होता है, बल्कि इन खेलों के प्रति समर्पण और मित्रता भी नैतिक शिक्षा का अभिन्न हिस्सा हैं, जो सामाजिक समरसता और नेतृत्व क्षमताओं के विकास में सहायक हैं। इन्हीं आधारशिलाओं पर, खेलों में नैतिक मानकों का निर्माण सामाजिक जीवन में आदर्श व्यवहार का संदेश प्रवाहित करता है, जिससे अन्य क्षेत्रों में भी नैतिक दृष्टिकोण का प्रसार संभव होता है। भारतीय संस्कृति में खेलों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक शिक्षा का माध्यम भी रहा है। खेलों में सच्चाई, खेल भावना, सम्मान और निष्पक्षता के मूल्य अविच्छिन्न आधार हैं, जो जीवन के विविध क्षेत्रों में नैतिकता का संचार करते हैं। समग्रता में, भारतीय ज्ञान परम्परा के इस दृष्टिकोण से स्पष्ट होता है कि नैतिकता का संरक्षण और उत्थान निरंतर सामाजिक चेतना का केंद्र रहा है, जो खेलों द्वारा भी अपनी अभिव्यक्ति पाता है। इन आदर्श मानदंडों का अनुसरण सामाजिक समरसता और व्यक्तित्व विकास के रचनात्मक स्त्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होता है।

**2.1. वाङ्मय और तत्त्वमीमांसा**

वाङ्मय एवं तत्त्वमीमांसा भारतीय संस्कृति के मूल आधार हैं, जो जीवन के दर्शन और व्यवहारिक पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारतीय तात्पर्य के अनुसार, जीवन का लक्ष्य धर्म और उसके अनुकूल आचरण है, जिसे सदाचार, नैतिक मूल्य, और सामाजिक दायित्व पूरा करते हैं। भारतीय साहित्य में लाभ-हानि, व्यवहार और विचारों का संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। खेलकूद केवल शारीरिक कौशल नहीं, बल्कि नैतिक आचरण का भी योगदान देते हैं। अनुशासन, आदर, और निष्पक्षता खेलों के माध्यम से सिखाए जाते हैं, जो व्यक्तित्व विकास में सहायक होते हैं। भारतीय तत्त्वमीमांसा, चाहे वह योग, वेदांत या उपनिषद् हो, अंतःसंबंध और समरसता का महत्व बताती है, जिसमें सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम का पालन आवश्यक है। खेलों में नैतिकता, समानता और समाज के प्रति जिम्मेदारी का प्रदर्शन होता है। परम्परागत खेल जैसे कबड्डी, खो-खो, और कुश्ती में टीम भावना, निष्पक्षता, और सम्मान की भावना साफ नजर आती है। ये खेल खिलाड़ियों को शारीरिक और नैतिक क्षमता विकसित करने का अवसर देते हैं। वाङ्मय और तत्त्वमीमांसा का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को समझने का माध्यम है, जो नैतिक आचरण को खेलों के जरिए प्रोत्साहित करता है। भारतीय खेलों में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, सामूहिकता, नेतृत्व और समर्पण का गहरा सम्बन्ध है, जो जीवन के हर पहलू में समाज में नैतिक और सामाजिक समरसता का परिचायक बनता है।

**2.2. नैतिक आचार की दार्शनिक धारणाएं**

दार्शनिक दृष्टिकोण से नैतिक आचार की धारणा भारतीय ज्ञान परम्परा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह आचार न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत सदाचार का वाहक है, बल्कि सामाजिक स्थायित्व और सामूहिक उन्नति का भी आधार है। भारतीय दर्शन में धर्म, श्रद्धा, और सदाचार को जीवन मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है, जो नैतिक आचरण के आधारस्वरूप स्थापित होते हैं। उपनिषद्, भगवद् गीता, और मनुस्मृति जैसी प्राचीन ग्रंथ इन मूल्यों का विस्तृत विवेचन करते हैं, जिनमें उचित कर्म, सत्यता, अहिंसा, और सत्यसंधान की महत्ता पर बल दिया गया है।

यह धारणा भी है कि नैतिक आचरण स्वयं में स्वाधीन नहीं, बल्कि अपने संस्कार और समाज के संस्कार के परिपेक्ष्य में विकसित होता है। अतः, परम्परागत खेलों में नैतिक आचरण का अर्थ केवल नियम पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चरित्र निर्माण, हर्ष-विषाद में समानता, और प्रतिस्पर्धा के साथ सम्मान का भाव भी शामिल है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में नैतिक आचरण को जीवन के हर क्षेत्र में परिलक्षित किया गया है, जिससे व्यक्ति नीतिपूर्ण एवं समाजोपयोगी बन सके।

संक्षेप में, भारतीय दर्शन में नैतिक आचरण एक सतत विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जिसमें आत्मसाक्षात्कार, समक्षता, विनम्रता, तथा परमार्थ की भावना प्रमुख मान्यताएँ हैं। ये तत्व न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि खेलकूद जैसी सामाजिक गतिविधियों में भी नैतिकता के आधारभूत स्तंभ हैं। इस प्रकार, परम्परागत खेलों का नैतिक आचार जीवन दर्शन का प्रतिबिंब है, जो हमे सदाचार, टीम भावना और सामाजिक समरसता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

### 3. खेलों के सांस्कृतिक संदर्भ

भारतीय परंपरागत खेलों में नैतिक आचार का प्रवर्तन सामाजिक जीवन के आधारभूत स्तंभ के रूप में माना जाता है। इन खेलों का सांस्कृतिक संदर्भ न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि इसमें नैतिक मूल्यों एवं चरित्र निर्माण की प्रवृत्ति भी निहित है। खेलों के दौरान प्रतिभागियों को सदाचार, ईमानदारी, सप्रेम प्रतिस्पर्धा और निष्पक्षता के मानकों का पालन करना अपेक्षित होता है। यह नैतिक आचरण खेल के नियमों एवं परंपरागत संस्कारों के तहत विकसित होता है, जो सामाजिक समरसता एवं व्यक्ति के चारित्रिक विकास की दिशा में सहायक सिद्ध होता है।

आंचलिक खेलों में स्थानीय जीवनशैली, परंपराएं एवं सामाजिक संरचनाएं परिलक्षित होती हैं; ये खेल समाज की विविधता एवं उसके सामाजिक बंधनों को अभिव्यक्त करते हैं। उदाहरणस्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों में खेले जाने वाले खेल जैसे भूलभुलैया, कबड्डी, लोकपथ आदि विशेष प्रकार के नैतिक प्रतीकों और सामाजिक संबंधों का अनुष्ठान करते हैं। इन खेलों में आपसी सहकारिता, समर्पण और सम्मान जैसे मूल्यों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था का संरक्षण होता है। साथ ही, इन खेलों में नेतृत्व, अनुशासन और निष्पक्षता का समन्वय भी दृश्य होता है, जो सामाजिक व्यवहार की आधारशिला है।

सामाजिक संरचना के अनुरूप खेलों का स्वरूप स्थानीय संसाधनों और परंपराओं के आधार पर विकसित हुआ है। इन खेलों के माध्यम से परंपरागत नैतिक मान्यताओं का संरक्षण होता है एवं युवा पीढ़ी में नैतिक जागरूकता का प्रसार होता है। निष्पक्षता, नियम पालन, साथियों के प्रति सद्भाव और न्यायप्रियता जैसे नैतिक मानकों का प्रवर्तन इन खेलों की चेतना का अभिन्न हिस्सा है। इससे सामाजिक सम्मान एवं मानवीय मूल्यों का संचार होता है, जो अंततः समाज में नैतिकता की स्थापना में सहायक है। इन सांस्कृतिक संदर्भों में खेले जाने वाले खेल न केवल शारीरिक कौशल का प्रदर्शन हैं, बल्कि ये राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर नैतिक शिक्षा के संवाहक भी हैं।

#### 3.1. परम्परागत खेल प्रणालियाँ

परम्परागत खेल प्रणालियाँ भारतीय संस्कृती में न केवल शारीरिक धाराओं का विकास करती हैं, बल्कि उनमें नैतिक मान्यताओं एवं आदर्शों का भी समावेश रहता है। इन खेल प्रणालियों का आधार जीवंत सामाजिक मान्यताएँ एवं सांस्कृतिक मूल्य हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परंपरागत आयोजन के माध्यम से संचारित होते हैं। भारतीय परम्परागत खेल स्वतंत्र रूप से भौगोलिक क्षेत्रों एवं समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं एवं संसाधनों के अनुरूप विकसित हुए हैं। इनमें खेल का उद्देश्य केवल विजय प्राप्त करना नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, अनुशासन, ईमानदारी और सहयोग की भावना का विकास भी है। उदाहरणतः, कुरुक्षेत्र के खेल, जैसी परंपराएँ, न केवल शारीरिक कौशल का प्रदर्शन हैं, बल्कि ये नैतिक शिक्षाओं के माध्यम से साथीभाव, नेतृत्व, एवं निष्पक्षता का भी संचार करते हैं। इन खेल प्रणालियों में नियमों का पालन, हार-जीत का सम्मान, तथा अपने साथी एवं प्रतिस्पर्धी के प्रति समर्पण जैसी नैतिक मान्यताएँ विशेष महत्व रखती हैं। साथ ही, इन प्रणालियों में लुप्त हो रही संवेदनाओं को पुनः विकसित करने का प्रयास होता है, जिससे सामाजिक संरचना में विश्वास और सहयोग कायम रह सके। विस्तार से, इन खेल प्रणालियों का मूल उद्देश्य मानव जीवन में नैतिकता एवं सामाजिक

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

आचार का विकास है, जो जीवन के प्रत्येक आयाम में नैतिक मूल्यांकन एवं व्यवहार के आधार बनते हैं। संक्षेप में, परम्परागत खेल प्रणालियाँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ये नैतिक अवगाहन, सामाजिक समरसता और मानवता के मूलता को प्रोत्साहित करने वाले एक जीवंत संस्कृतिक धरोहर हैं।

### 3.2. आंचलिक खेलों की विविधता और सामाजिक संरचना

आंचलिक खेलों की विविधता एवं सामाजिक संरचना उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रतिबिंब है। इनका आयोजन स्थानीय परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार होता है, जो पारंपरिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में खेले जाने वाले खेल बोली, परिधान और संगीत के माध्यम से स्थानीय पहचान प्रस्तुत करते हैं। इनकी विविधता में पर्यावरणीय परिस्थितियों, जाति, वर्ग और लिंग के अंतर शामिल होते हैं, जो सामाजिक संरचना की विशेषताओं का संकेत देते हैं। खेलों में कुछ विशेष जातियों की भूमिका दर्शाती हैं, जिससे सामाजिक भागीदारी एवं समरसता का निर्माण होता है। इनमें नैतिक मूल्यों का प्रवर्तन और निष्पक्षता, सम्मान एवं नेतृत्व का महत्त्व होता है। खेलों के नियम सामाजिक व्यवस्था के नैतिक मानकों के अनुरूप होते हैं, जो न्यायसंगत समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। आंचलिक खेल सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करते हैं और आपसी सम्मान, करुणा एवं आत्मीयता का विकास करते हैं। इनके आयोजन में सदाचार एवं सहकारिता का प्रचार होता है, जिससे नैतिकता का संचार होता है। ये खेल सामाजिक चेतना और नैतिक मूल्यों की स्थापना का एक माध्यम हैं, जो समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं।

## 4. नैतिक आचरण के मानक एकत्रीकरण

नैतिक आचरण के मानक विभिन्न संस्कृतियों में एक सामान्य धारा का प्रतीक हैं, जो समाज में सद्भाव और समानता को बढ़ावा देते हैं। भारत के परंपरागत खेल नैतिक मूल्यों, सामाजिक सरोकारों और धार्मिक दृष्टिकोणों पर आधारित हैं। इन खेलों में खेल भावना, सम्मान, निष्पक्षता, आत्म-संयम और साहस का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका उद्देश्य केवल विजय या पुरस्कार नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और नैतिक ऊँचाई का समझना भी है। नैतिक मानकों का एकत्रीकरण खेलों में सम्मान और करुणा को बढ़ावा देता है, सामाजिक समरसता को साकार करता है। नेतृत्व का आधार आदरपूर्ण व्यवहार और निष्पक्ष निर्णय लेना है। निष्पक्षता खेल भावना का हिस्सा है और समाज में न्याय को मजबूत करती है। सही निर्णय और नैतिक आचरण से खिलाड़ियों का व्यक्तित्व विकास होता है और विश्वास का वातावरण निर्मित होता है। भारतीय परंपरागत खेलों में ये मानक सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य संरचनाओं का प्रतिबिंब हैं, जिससे व्यक्ति एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। इनका अध्ययन और अभ्यास सामाजिक ताने-बाने को मजबूत करता है तथा नैतिक मूल्यों की स्थिरता स्थापित करता है, जिससे सद्भाव और समरसता का वातावरण विकसित होता है।

### 4.1. खेलनैतिकता के नियम और मूल्य

खेलनैतिकता के नियम और मूल्य हमें खेल के माध्यम से सत्यम् और धर्म के सिद्धांतों का पालन करने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय परम्परागत खेलों में न केवल कुशलता और प्रतिस्पर्धा का सम्मान किया जाता है, बल्कि इनसे जुड़ी नैतिक मान्यताएं खेल भावना का आधार बनती हैं। इन नियमों का स्थापित होना, सामाजिक सम्मान और सहयोग की भावना को मजबूत बनाता है, जो सामाजिक समरसता के निर्माण में सहायक होती हैं। स्वच्छता, सत्यनिष्ठा, और निष्पक्षता जैसे मूल्यों को खेल का हिस्सा माना जाता है, जहाँ सफलता की आकांक्षा के साथ ही खेल का मूल उद्देश्य नैतिकता और सामाजिक समरसता बनाए रखना होता है। नैतिक मूल्य, जैसे ही खेल में प्रचलित होते हैं, वे खिलाड़ियों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं और प्रतिस्पर्धा को सकारात्मक दिशा में ले जाते हैं। उदाहरण के लिए, खेल में हार या जीत दोनों ही परिस्थियों में सम्मान और सद्भाव बनाए रखने का संदेश व्यापक रहता है। इस प्रक्रिया में, खिलाड़ियों का खेल के प्रति समर्पण, विनम्रता और सम्मान की भावना बनाना आवश्यक है। भारतीय परंपरा में नैतिक आचरण का यह मानदंड सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों के विस्तार का आधार बनता है, जिससे खेल के माध्यम से सदाचार, अनुशासन और सामूहिकता का विकास होता है। ऐसे नियम एवं मूल्य न केवल खेल के अभ्यास में बल्कि जीवन के विविध क्षेत्रों में भी नैतिक मूल्यों का प्रवेश करा देते हैं। अंततः, ये

नैतिक आचार के नियम खेल को सिर्फ प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधि न बनाकर समाज में नैतिकता का संचार भी करते हैं, जिससे समाज के हर वर्ग में नैतिकता का प्रसार हो सके।

**4.2. खेल-व्यवहार और सामाजिक समरसता**

खेल-व्यवहार एवं सामाजिक समरसता का संबंध भारतीय परंपरागत खेल प्रणालियों में गहरी छवि है। इन खेलों में न केवल शारीरिक कौशल और योग्यता का प्रदर्शन होता है, बल्कि सामाजिक संबंधों और नैतिक मान्यताओं का भी संरक्षण सुनिश्चित किया जाता है। इन खेलों का आयोजन श्रेणी-आधारित, समानता और सहयोग की भावना को दृढ़ करने के उद्देश्य से किया जाता है, जहाँ सभी खिलाड़ी अपनी भूमिका का सम्मानपूर्वक निर्वहन करते हैं। नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, नेतृत्व, हार-जीत का सम्मान, और निष्पक्षता का पालन खेल की सार्थकता और सामाजिक जीवन में स्थायी प्रभाव छोड़ता है। इनके माध्यम से बच्चों और युवाओं में दलगत भावना के बजाय सामाजिक समरसता का विकास होता है, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं।

खेल-व्यवहार में अनुशासन और परस्पर सम्मान की महत्ता स्पष्ट है। नैतिक आचार का पालन, जैसे कि खेल के निर्धारित नियमों का सम्मान, दूसरों के साथ सदभाव और सहिष्णुता का परिचय देना, इन अभ्यासों को मात्र खेल न होकर जीवन के नैतिक मानदंडों का अविभाज्य भाग बनाते हैं। सामूहिकता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करने वाले ये खेल सामाजिक निष्ठा और भावना के सतत विकास में सहायक हैं। इसके साथ ही, इनमें नेतृत्व कौशल का विकास और सम्मानजनक प्रतिस्पर्धा भी नैतिक आचरण का अभिन्न अंग है। इससे न केवल व्यक्तिगत गुणनियों का विकास होता है, बल्कि समाज में सामंजस्य और समरसता का भी सशक्त आधार बनता है। भारतीय परंपरा के इन खेलों का अनुभव न सिर्फ खेल भावना का जागरण करता है, बल्कि सामाजिक जीवन की नैतिक संरचना का भी निर्माण करता है।

**4.3. नेतृत्व, सम्मान, और निष्पक्षता का निर्माण**

नेतृत्व का विकास खेलों में स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें प्रतिभागी समूह का मार्गदर्शन करते हैं। इसका आधार नैतिक मूल्यों में निहित होता है, जो जिम्मेदारी, सहिष्णुता और समर्पण से जुड़े हैं। सही नेतृत्व विजेता को निर्धारित करने के साथ-साथ समरसता, अनुशासन और सहयोग की भावना को भी मजबूत करता है। यह नेतृत्व सामाजिक श्रेष्ठता का प्रतीक बनता है, जहां प्रत्येक सदस्य अपने कर्तव्यों का पालन करता है। सम्मान का बोध आपसी संबंधों का आधार है। खिलाड़ी एक-दूसरे के प्रयासों और उपलब्धियों का सम्मान करते हैं, जिससे सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण बनता है। इससे सामाजिक मूल्य और नैतिक संस्कार भी पुष्ट होते हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में अनुकरणीय रहते हैं। खेल में सम्मान का अर्थ केवल लक्ष्य प्राप्ति नहीं, बल्कि हर व्यक्तित्व का सम्मान करना है, जो नैतिक मान्यताओं का प्रतीक है। निष्पक्षता का आधार समानता का पालन है, जिसमें सभी खिलाड़ियों के प्रति समान व्यवहार सुनिश्चित किया जाता है। यह भावना खेल को नैतिक अभ्यास का मंच बनाती है, जहां दोनों पक्षों का सम्मान किया जाता है। निष्पक्षता का महत्व समाज में समानता और वैधता की स्थापना का आधार भी है। इस तरह, नेतृत्व, सम्मान और निष्पक्षता खेलों में नैतिक आचरण के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, जो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सामाजिक नैतिकता के आदर्शों की व्याख्या करते हैं। इनसे शांति, सौहार्द्र एवं सामाजिक समरसता के संस्कार पुष्ट होते हैं।

**5. ऐतिहासिक उदाहरण और विश्लेषण**

प्राचीन भारतीय परंपरा में खेल केवल शारीरिक प्रदर्शन नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण का उपाय भी रहे हैं। क्षेत्रीय खेलों में श्रम, अनुशासन, सम्मान, और निष्पक्षता जैसे मूल्य हमेशा प्रोत्साहित किए गए हैं। उदाहरणस्वरूप, रावरामली, कुश्ती, और खो-खो जैसे खेलों में खिलाड़ियों का व्यवहार विजेता और हारने वाले तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक समरसता और नेतृत्व कौशल का विकास भी हुआ। इन खेलों में अनुशासन और सम्मान की परंपरा आज भी विविध आयोजनों में जीवित है, जहाँ खेल नीतियाँ सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप होती हैं। आंचलिक खेल मनोरंजन

नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं। पूर्वी भारत के तोर्रा पच्चीसी और पश्चिमी भारत के मलखंभ में निष्पक्षता और समर्पण का माहौल स्पष्ट है। निर्णायक निर्णय परंपरागत जजमेंट और नैतिक मानदंडों पर आधारित होते हैं। संकट के समय खिलाड़ियों की नैतिक प्रतिबद्धता उनके चरित्र को प्रदर्शित करती है। खेलों का सामाजिक और नैतिक आचार से गहरा संबंध रहा है, और प्रतियोगिताएँ सामाजिक माहौल को मजबूत करने के लिए होती थीं। महाकाव्यों में भीम और अर्जुन जैसे योद्धाओं का खेल और युद्ध उनके नैतिक आचरण का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। यह साबित करता है कि खेल केवल कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक संस्थान भी हैं।historical context में खेल संस्कृति का नैतिक योगदान नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है।

### 5.1. भारत के विभिन्न क्षेत्रीय खेलों से नैतिक आचरण के द्रष्टान्त

विभिन्न क्षेत्रीय खेलों में नैतिक आचरण का इतिहास सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों का महत्वपूर्ण आयाम है। इन खेलों में शारीरिक कौशल के साथ नैतिक मूल्यों का संचार भी होता है। उदाहरण के लिए, मार्शल कला और योग में सम्मान, अनुशासन और आत्म-संयम की खासियत होती है। ये खेल प्रतियोगिता को नैतिकता से जोड़ते हैं, जिसमें विजेता और हारने वाले दोनों के प्रति समान सत्कार किया जाता है। परम्पराओं में निष्ठा, ईमानदारी और सहिष्णुता का समावेश होता है, जो समाज में सकारात्मक मान्यताओं का संचार करता है। पूर्वोत्तर भारत के पौड़ी और लुका-छुप्पी जैसे खेल सामाजिक सद्भाव और सहयोग की भावना को विकसित करते हैं। इन खेलों में नेतृत्वकर्ता नैतिक आदर्श स्थापित करते हैं, जिससे सामाजिक समरसता बढ़ती है। बंगाल की 'दौड़' और पंजाब के 'कुश्ती' में समानता और निष्पक्षता का महत्व है। दक्षिण भारत के खेलों में श्रद्धा, विनम्रता और सम्मान का पालन होता है, जो समाज में नैतिक शिक्षा का माध्यम बनता है। इस प्रकार, क्षेत्रीय खेल धरोहर और नैतिक आचरण के मिश्रित सूत्र विकसित करते हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के नैतिक मूल्यों को मजबूती प्रदान करते हैं।

### 5.2. दुष्कर परिस्थितियों में निर्णय-निर्माण

दुष्कर परिस्थितियों में निर्णय-निर्माण का महत्त्व भारतीय खेल परंपरा में विशेष रूप से उजागर होता है। इन स्थितियों में सही दिशा में कदम उठाना आसान नहीं होता, किन्तु भारतीय संस्कृति की नैतिक परंपराएँ इस योग्यता को विकसित करने में सहायक होती हैं। खेलों में चुनौतीपूर्ण क्षणों का सामना करते समय नैतिक सिद्धांतों का अनुसरण करना, आत्मसंयम बनाए रखना और सामाजिक हित को प्राथमिकता देना आवश्यक है। भारतीय परंपरागत खेलों में खिलाड़ियों को धर्म, सम्मान और निष्पक्षता का पालन करना अनिवार्य है। जैसे, कबड्डी या खो-खो जैसे खेलों में दबाव में होने पर निर्णय सम्पूर्ण टीम की सफलता या असफलता निर्धारित करता है। ऐसे निर्णय व्यक्तिगत नैतिकता का परिक्षण होते हैं और सामाजिक मानदंडों का भी प्रतिबिंब होते हैं। भारतीय दर्शन में "धैर्य" और "संयम" को महत्वपूर्ण माना गया है, जो सही निर्णय लेने में सहायक हैं। नैतिक संघर्षों का सामना करने हेतु पारंपरिक मूल्यों का अनुसरण कर, अनुशासन बनाए रखना और सामाजिक सम्मान की रक्षा अनिवार्य है। इससे धैर्य और निष्पक्षता के मूल्य विकसित होते हैं। ऐसे में व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सामाजिक हित को प्राथमिकता देता है, जिससे नेतृत्व और सम्मान का महत्त्व सामने आता है। अतः, दुष्कर परिस्थितियों में सही निर्णय न केवल व्यक्तिगत कर्म का क्षेत्र है, बल्कि यह भारतीय नैतिक परंपरा का अभिन्न तत्व है।

## 6. आधुनिक शिक्षा और खेल-आचार का समन्वय

आधुनिक खेल शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास के साथ नैतिक मूल्यों का संवर्धन भी है। खेल-आचार का महत्व इस मामले में है कि छात्र न केवल खेल में कुशल बनें, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्य भी स्थापित करें। शैक्षणिक संस्थानों में खेल-आचार के पाठ्यक्रम में ध्यान देना आवश्यक है। यह परंपरागत नैतिक मूल्यों, जैसे सत्यानिष्ठा और निष्पक्षता को जागरूकता के साथ स्थापित करता है। गुरुकुल परंपरा में शिक्षक-छात्र के संबंधों से नैतिकता का प्रारंभिक प्रशिक्षण मिलता था, जो आज भी उपयोगी है। खेल-आचार का मूल्यांकन खेल प्रदर्शन और नैतिक व्यवहार पर होना चाहिए। खिलाड़ियों की नेतृत्व क्षमता और निष्पक्ष निर्णय लेने की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन भी जरूरी है। इससे विद्यार्थियों में जिम्मेदारी का अनुभव बढ़ता है और

सकारात्मक समूह परिवेश में काम करने के लिए प्रेरित होते हैं। प्रशिक्षकों को नैतिकता के मानकों का पालन करना चाहिए, ताकि नैतिकता स्थायी बने। इस समन्वय से खेल का स्वरूप समृद्ध होता है और सामाजिक व मनोवैज्ञानिक विकास में मदद मिलती है। आधुनिक शिक्षा में खेल-आचार का समावेश पारंपरिक मूल्य प्रणालियों और व्यक्तित्व का सशक्तिकरण करता है।

**6.1. खेल-आचार के पाठ्यक्रमीय समाकलन**

खेल-आचार का पाठ्यक्रमीय समाकलन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का स्थायी परिचय आवश्यक है। यह समाकलन खेलों में नैतिक मानदंडों का शिक्षण कर विद्यार्थियों में स्वाभाविक विकास सुनिश्चित करता है। प्रत्येक खेल हमारे समाज के प्रतीकों और मूल्यों का प्रतिबिंब होता है, जिनका अध्ययन नैतिक चेतना का संरक्षण करता है। पाठ्यक्रम में खेल-आचार का समावेशन विद्यार्थियों को वयस्क जीवन में सहयोगी और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाता है। इससे वे 'सच्चाई', 'प्रतिष्ठा', 'निष्पक्षता' और 'सम्मान' जैसे नैतिक मूल्यों का अनुकरण करते हैं। शिक्षकों का दायित्व है कि वे खेल प्रबंधन के दौरान नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करें। शिक्षण सामग्री एवं गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अभिवृद्धि आवश्यक है। इससे सामाजिक समरसता, सहयोग एवं निष्पक्षता की भावना विकसित होती है, जो दीर्घकालिक सौहार्द को प्रोत्साहित करती है। नैतिक आचार का समावेश खेल-शिक्षा का एक सशक्त आधार बनाता है और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं नेतृत्व की भावना उत्पन्न करता है। खेल-आचार का समाकलन शिक्षण में सुधार लाता है और नैतिक आधार सुनिश्चित करता है।

**6.2. गवर्मेंस के निकष और मापन**

गवर्मेंस के निकष और मापन के संबंध में भारतीय परम्परागत और आंचलिक खेलों में नैतिक आचरण का विश्लेषण आवश्यक है। नैतिक मूल्यांकन के लिए स्पष्ट मानक एवं मापदण्ड विकसित करना जरूरी है, जिससे न्याय, सम्मान, निष्पक्षता, और ईमानदारी जैसी नैतिक मान्यताओं का क्रियान्वयन किया जा सके। विभिन्न खेलों में प्रदर्शन का मापन न केवल शारीरिक योग्यता या तकनीकी दक्षता तक सीमित है, बल्कि खिलाड़ी के व्यवहार, नेतृत्व क्षमता, और सामाजिक दायित्व पर भी ध्यान दिया जाता है। नैतिक आचार के मानकों को निर्धारित करते समय योग्यता, उपलब्धि, सजगता, सहिष्णुता, एवं समर्पण जैसी मानवीय मूल्यों को शामिल करना अनिवार्य है। अनुशासन, सहकर्मी एवं प्रतिस्पर्धी के प्रति सम्मान, और खेल भावना का पालन जैसे मानदंड स्थापित किए जाते हैं। इनका मूल्यांकन निरपेक्षता और निष्पक्षता पर आधारित होना चाहिए, ताकि किसी प्रकार का भेदभाव न हो। नैतिक प्रदर्शन का मूल्यांकन खिलाड़ियों के चरित्र और स्वभाव का निरीक्षण कर किया जाता है। संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता और नेतृत्व कौशल का आंकलन भी शामिल है। खेल संबंधी मूल्यांकन उपकरण जैसे निरीक्षण प्रपत्र और प्रतिक्रिया फॉर्म विकसित किए जाते हैं। इससे नैतिकता, अनुशासन एवं नेतृत्व क्षमता का अवलोकन संभव होता है। नैतिक आचरण का मापन परिणाम पर निर्भर नहीं होता, बल्कि खेल के पूरे व्यवहार और प्रक्रिया का समग्र मूल्यांकन इसमें शामिल होता है। इन मानदंडों के आधार पर नैतिकता का संवर्धन एवं मूल्यांकन सुनिश्चित किया जाता है, जो समाज की नैतिक संरचना को मजबूत बनाता है।

**7. निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूप में, स्पष्ट है कि भारतीय परंपरागत और आंचलिक खेलों में नैतिक आचरण का समावेश उनकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत का स्थाई आधार है। ये खेल न केवल शारीरिक कौशल और सामाजिक सहभागिता के माध्यम हैं, बल्कि वे नैतिक मूल्यों के संवाहक भी हैं। इनके माध्यम से निष्ठा, सम्मान, निष्पक्षता, नेतृत्व व समरसता जैसे मानवीय गुण विकसित होते हैं, जो समाज की स्थिरता और एकता के लिए अनिवार्य हैं। ऐतिहासिक संदर्भ में देखें तो विभिन्न क्षेत्रीय खेलों ने समय-समय पर संकट के समय सही निर्णय लेने, समर्पित भावना और अनुशासन का उदाहरण प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग में इन पारंपरिक मूल्यों का संरक्षण और प्रोत्साहन आवश्यक है ताकि युवा पीढ़ी में उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। खेल-आचार का पाठ्यक्रमीय समाकलन, उनके मापदंड और प्रदर्शन के तरीके, इनके नैतिक महत्व को समझने और उजागर करने में सहायक हैं। अंततः,

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

भारतीय खेलों की विशिष्ट परंपरा न केवल प्रतिस्पर्धात्मकता का परिचायक है, बल्कि नैतिक आचरण की शिक्षा का समृद्ध माध्यम भी है, जो सामूहिकता, सम्मान व न्यायप्रियता को बढ़ावा देता है। इन्हीं मूल्यों का दृढ़ पालन ही समाज को नैतिक संधान, सदाचार व सामाजिक समरसता की दिशा में आगे बढ़ाने वाला आधार है।

**8. संदर्भ**


- रुकिया, आर. (2019). पारंपरिक खेलों में निलाई-निलाई कैरेक्टर का ज्ञान।
- सिंह, जे., कौर नंदा, आई., चतुर्वेदी, आर., और ढींगरा, एस. (2017). स्पोर्ट्स में डेवलपमेंट और चैलेंज: इंडियन क्रिकेट की एक केस स्टडी।
- मुश्ताक अहमद शेख. (2015). मौजूदा स्पोर्ट्स फैसिलिटी: इंदौर और श्रीनगर जिलों के कुछ सरकारी कॉलेजों की एक कम्पेरेटिव स्टडी।
- बटलर, जे. (2014). गेम्स एजुकेशन में एथिक्स की सिचुएशन।
- एनआई लुह, एस. यू. एस. टी. आई. ए. डब्ल्यू. ए. टी. आई. (2012). बडुंग रीजेंसी में बाली लोगों के गेम्स के फॉर्म और कल्चरल वैल्यू का एनालिसिस।
- रुकिया, आर. (2019). Penanaman Nilai-Nilai Karakter pada Anak Melalui Permainan Tradisional.
- कुमार, एस. (2019). *भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा के दार्शनिक आधार*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, आर. के. (2018). *भारतीय संस्कृति और नैतिक शिक्षा*. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
- सिंह, ए. के. (2020). भारतीय परंपरागत खेलों का शैक्षिक एवं सांस्कृतिक महत्व। *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, 12(2), 45–52।
- त्रिपाठी, पी. (2017). *भारतीय ज्ञान परंपरा: दर्शन, संस्कृति और समाज*. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
- यादव, बी. के. (2021). पारंपरिक खेलों में नैतिक मूल्यों का विकास। *शारीरिक शिक्षा एवं खेल विज्ञान जर्नल*, 9(1), 60–68।
- National Council of Educational Research and Training. (2022). *भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा*. नई दिल्ली: NCERT.
- प्रधान, एम. (2016). खेल और नैतिकता: भारतीय दृष्टिकोण। *स्पोर्ट्स साइंस जर्नल*, 5(1), 33–40।
- Government of India, Ministry of Youth Affairs and Sports. (2017). *राष्ट्रीय खेल नीति*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
- कुमार, वी., & मिश्रा, आर. (2018). ग्रामीण एवं पारंपरिक खेलों का सामाजिक महत्व। *भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा*, 10(3), 72–80।
- UNESCO. (2015). *Quality Physical Education: Guidelines for Policy Makers*. Paris: UNESCO Publishing.



***Cite this Article:***

**डॉ. बृजेश कुमार यादव, "भारतीय ज्ञान परम्परा के मूलाधार: हमारे परम्परागत तथा आंचलिक खेलों में नैतिक आचरण"** *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.42-49, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*


This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

**डॉ. बृजेश कुमार यादव**

**For publication of research paper title**

**भारतीय ज्ञान परम्परा के मूलाधार: हमारे परम्परागत तथा आंचलिक खेलों में नैतिक आचरण**

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

**DOI:-** https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.05